संपादकीय

'टका हर्ता, टका कर्ता, टका ही मोक्ष प्रदायक'

टका या रुपए को हर्ता यानी सभी दुखों का हरण करने वाला, कर्ता यानी सभी कार्यों को करने-कराने वाला तथा स्वर्ग व मोक्षप्रदायक कहा गया है। शास्त्रों में धन से धर्म होना और तत्पश्चात् सुख की प्राप्ति बताई गई है -'धनात् धर्मम् ततम् सुखम्।' कहने के लिए ही सही, इसे माया भी कहा जाता है। हाल में ही भारत की सबसे बड़ी करेंसी पाँच सौ और एक हजार के नोट को सरकार द्वारा बंद किए जाने के निर्णय से सीधे साबित हुआ है कि रुपए-पैसे अपने आप में कुछ नहीं होते। उन्हें धन के प्रतीक रूप में कुछ शासकीय मूल्य-भाव दिए गए हैं, इसलिए वे मूल्यवान हैं। धन पराक्रम व परिश्रम का प्रतिफल है, लेकिन आजकल इससे इतर से आए धन का ही प्रभुत्व है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी जब नोटों को बंद करने का एलान किया, तब यही कहा कि ८ नवंबर की मध्यरात्रि से 'लीगल टेंडर' नहीं रहने के कारण ये नोट कागज की रद्दी हो जाएँगे। एकदम छोटे होने के कारण रद्दी रूप में भी इनका इस्तेमाल कठिन है। कुछ पदार्थ स्वयं में तुच्छ होने के बाद भी कानूनी, सामाजिक मान्यता तथा किसी दूसरे वस्तु-कार्य के प्रतीक होने के कारण से काफी महत्त्वपूर्ण बन जाते हैं, जैसे प्रमाण पत्र व अन्य कागजात आदि। दूसरी ओर हवा, पानी, आग, धूप, अन्न, फल आदि केवल अपने वजूद के कारण महत्त्वपूर्ण हैं, भले ही किसी नाम से इन्हें पुकारा जाए। इनकी मान्यता कभी कोई राजा, सरकार, अदालत या पूंजीपति अपने किसी आदेश से खत्म नहीं कर सकते, क्योंकि इनकी स्वयं की ही सार्थकता-उपयोगिता है। भाषाएँ और उनके शब्द भी वस्तुओं की प्रतीकात्मक व सांकेतिक समझ के लिए प्रयुक्त होने के कारण खुद वस्तु जैसे लगते हैं, पर वास्तव में वस्तु का तिनका भर अंश भी नहीं होते। इसलिए यदि 'चावल' को 'गेहूँ' कहा जाने लगे और 'आप' की जगह 'तुम' प्रयुक्त होने लगे, तो कालांतर में ये शब्द उक्त चीजों के बोधक बन जाएँगे। इसी प्रकार कागज के नोट भी घन के प्रतीक रूप में खास-खास मूल्य के संकेतक हैं, नहीं तो वे कागज के टुकड़ों के सिवा हैं क्या?

समय बीतने के साथ सामान्यतः मुद्रा का मूल्य घटता है, जिसे अर्थशास्त्र की शब्दावली में मुद्रा स्फीति कहा जाता है। बाजार में खरीददारी के समय महसूस होता है कि जो काम तीन साल पहले सौ रुपए में होता था, वह अब डेढ़ सौ में हो पाता है। इसका कारण महँगाई का बढ़ना है। इसलिए माँगने वाला कहता है कि पाँच-दस रुपए में आजकल होता क्या है, कोई कहता है कि पचास-सौ रुपए से कुछ नहीं होता। कोई कहता है कि एक हजार का नोट तो ठेलेवाला ही तोड़ देता है, कोई कहता है कि महँगाई इतनी है कि पाँच सौ की सब्जी एक छोटे पोलिथीन में चली आती है। कोई कहता है कि पचास हजार, एक लाख में भी क्या होता है, एक ड्राईंगरूम का फर्नीचर भी तो नहीं आता, रुपए कहाँ चले जाते हैं, पता नहीं चलता। इससे आगे कोई कहता है कि अब दस-पंद्रह लाख की कोई कीमत नहीं रही, इससे एक फ्लैट भी नहीं खरीदाता। इसी प्रकार लोग बताते है कि अमुख जगह तो डेढ़ करोड़ से नीचे के फ्लैट हैं ही नहीं और फलाँ स्थान पर दस करोड़ से नीचे की कोई कोठी नहीं है। ऐसा नहीं कि ये सब झूठ बोल रहे होते हैं, बल्कि अपनी-अपनी जगह बिल्कुल सही होते हैं। ऐसे में जिनके लिए दस करोड़ ज्यादा नहीं है, उनके लिए पाँच-दस रुपए की कितनी कीमत होगी? चाहे किसी के लिए सौ-पचास रुपए या पचास हजार, एक लाख का कितना ही कम महत्त्व हो, पर उसके पास यदि कभी दस रुपए न हों और उसके बिना काम बिगड़ जाए, तब दस रुपए का क्या महत्व है - पता चलता है। इस प्रकार पैसे के रहने पर उसका मूल्य कम पता चलता है, न रहने पर अधिक महसूस होता है। रहने पर लाखों-करोड़ों भी कम लगते हैं और न रहने पर दस रुपया भी बहुत बड़ा लगता है।

धन अनेक स्तरों पर बेफिक्र बनाता है। रुपयों से हैसियत बनती और तय होती है। शादी के अवसर पर दूल्हे को नोटों की माला पहनाना, चुनाव के समय उम्मीदवारों को पैसों से तौलना, नाच-गाने व जश्न के समय रुपए-पैसे लुटाकर वर्षा इसी कारण की जाती है। बाट से तौला जाए या फिर रुपए-पैसों, सोने-चाँदी आदि से, तौले जाने वाले व्यक्ति की स्थिति में रत्ती भर भी परिवर्तन नहीं आता, लेकिन उसके इस्तेमाल का अधिकार मिलने पर मनोवैज्ञानिक परितोष, अहं की तुष्टि व सुख का सृजन हो सकता है। हीरे-मोती, सोने-चाँदी शोभा बढ़ाने वाले कीमती पदार्थ हैं, अतः इसे लोग धारण करते हैं। इससे कोई सीधा या परोक्ष लाभ नहीं होता, उल्टे कंचन और कामिनी के तौर पर नुकसान की आशंका

रहती है। कवि का कहना है कि धन का नशा नशीले पदार्थों के मुकाबले बहुत अधिक होता है, क्योंकि नशीली चीज को खाने के बाद मादकता चढ़ती है, जबकि धन को पा लेने मात्र से नशा चढ़ जाता है, जो जल्दी उतरता भी नहीं –

'कनक कनक तै सौ गुनी मादकता अधिकाय।
एक खाय बौराए जग एक पाय बौराए।।'

सोने की कढ़ाई वाले अपने शयनकक्ष, स्नानघर व हवाई जहाज को प्रयोग में लाने वाले ट्रंप अमेरिका के नए राष्ट्रपति बन गए हैं। हीरा-मोती, सोना-चाँदी जहाँ शान-शौकत की पहचान हैं, वहीं अचल संपत्ति के रूप में धन काला हो या सफेद, उसके निवेश का बढ़िया जरिया भी हैं। मोदी सरकार ने वैसे तो मात्र दो नोट बंद करने की घोषणा की, बाकी नोट व सिक्के पहले की ही तरह चलते रहे, फिर भी कुल करेंसी में पाँच सौ और एक हजार के नोटों की उपस्थिति ८६.४ प्रतिशत होने के कारण चारों ओर अफरा-तफरी फैल गई। वह भी तब, जब सरकार ने दो हजार रुपए के नोटों को तुरंत जारी किया, पर इसके खुल्ले की समस्या बढ़ गई। एलान के साथ ही दूकानदारों ने ये नोट लेने बंद कर दिए। उसी रात अच्छी-खासी नकदी रखने वालों ने बिना बजट, आपात स्थिति में बड़ी मात्रा में हीरे, सोने, चाँदी का क्रय किया। आभूषण बिक्रेताओं के लिए तो यह सुनहरा मौका था ही। इसलिए आभूषणों के दाम काफी चढ़ गए, जबकि अघोषित आय वाले तथा कहीं और न खप पाने की संभावना वाले पाँच सौ, हजार के नोटों का बाजार-मूल्य नीचे गिर गया।

सरकार ने हेलीकॉप्टरों से रुपयों की आपूर्ति कराई। नोटों की छपाई के लिए सेना तक को भिड़ाने की खबर आई। अनेक लोग पुराने नोट रखने के बावजूद बिना पैसे वालों की तरह परेशानियाँ झेलते रहे। शादियों की रौनक कई जगह फीकी पड़ गई, दूल्हा-दुल्हन को भी लाइन में लगना पड़ा। शादी वालों को ढाई लाख देने की घोषणा पर अमल कम हुआ। आर्थिक मामलों के सचिव शशिकांत दास ने उपहार में चेक देने का सुझाव दिया। टेलीविजन पर ऐसे आमंत्रण-पत्र के नमूने दिखाए गए, जिस पर चिप चिपकाए गए थे कि कृपया पाँच सौ, हजार के नोट न दें। अवैध दान से बचने के लिए कुछ जगह दानपेटिका सील करनी पड़ी, उस पर लिखे गए कि पाँच सौ, हजार के नोट न डालें। बावजूद इसके, मंदिरों में चढ़ावे में काफी उछाल देखा गया। जनधन खाते व बंद पड़े न जाने कितने खाते एकाएक मालामाल हो गए। ऐसे सफेद रास्तों से कुछ काले धन बैंकों में आए हैं। भिखारी भी पाँच सौ, एक हजार के नोट लेने से मना करते समाचारों में स्थान पाए। सरकारी घोषणाओं से अलग बैंकों ने अपने स्तर पर व्यावहारिक नियम लागू किए, जो गलत व सही दोनों दिशाओं में अनूठे रहे। कई संस्थानों ने पुराने रुपयों को खपाने के उद्देश्य से अपने कर्मचारियों को दो-चार महीने के अग्रिम वेतन दिए। कई दिन धक्के खाकर बहुत-सारे लोग चंद रुपए भी नहीं निकाल सके, वहीं इसी दौरान छापों में लगभग एक अरब से ज्यादा की नई करेंसी पकड़ी गई तथा पाँच सौ करोड़ से अधिक रुपए जब्त हुए हैं। पकड़े गए सोने-चाँदी अलग हैं। बैंकों में भी धाँधलीबाजी होती रही है, पर यह पहली बार बड़े पैमाने पर उजागर हुई है। कालेधन वालों ने बहुत सारे नोट नदी-नालों में बहवा दिए, कूड़े में फेंक दिए, जला दिए। ऐसे में जितनी रकम की करेंसियाँ बैंकों में वापस नहीं आएँगी, वह सीधे कालाधन मानी जाएँगी। पर सवाल है कि क्या इसका सही आकलन हो पाएगा?

लंबे समय से नकदी में ही लेन-देन होता आया है, हालाँकि बैंकों के गठन व विकास ने लोगों को अपने पास जरूरत भर ही नकदी रखने की आदत डलवा दी है। एटीएम आने के बाद यह काम काफी सुगम हो गया। पास रखी जाने वाली बड़ी नकदी बड़ी करेंसी में ही रखी जाती है। अब डिजिटल लेनदेन के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है, या अनेक जगह नकदी के अभाव में मजबूर होना पड़ रहा है। बाकी लेनदेन की तरह इसमें भी जलसाजी होगी। बावजूद इसके, लेनदेन में पारदर्शिता आएगी, इसका एक स्वतः रिकार्ड स्थापित होगा। बिना पैसे पास रखे जीने की आदत बनेगी, जो अच्छी बात है। करदाताओं की संख्या बढ़ने से सरकार की आमदनी बढ़ेगी। विचौलिए की भूमिका कम होगी, उन्हें नए तरीके खोजने होंगे या वैध तरीके अपनाने होंगे। जमीन-मकान की कीमत में कमी आने के साथ कृषि जैसे करविहीन कार्यों की ओर लोगों का झुकाव हो सकता है। उचित प्रबंधन से अल्पकालिक दिक्कत के बावजूद दीर्घकालिक सहूलियतें मिल सकती हैं, अन्यथा संकट बढ़ भी सकता है। अस्तु, कालेधन पर लगाम लगाने के लिए कालेधन के स्रोतों, कार्यों व उत्पादकों को समूल नष्ट करना अधिक आवश्यक है। इसके लिए भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी, दलाली आदि को पूरी तरह खत्म करना होगा, खातों की हदबंदी व चकबंदी करनी होगी, यानी एक व्यक्ति के सभी खातों को परस्पर जोड़कर खातों की अधिकतम संख्या निश्चित करनी होगी और नकदी रखने के सीमा-निर्धारण के साथ प्रत्येक नागरिक की संपत्ति का डाटा तैयार कर रिकार्ड में रखने की जरूरत है।